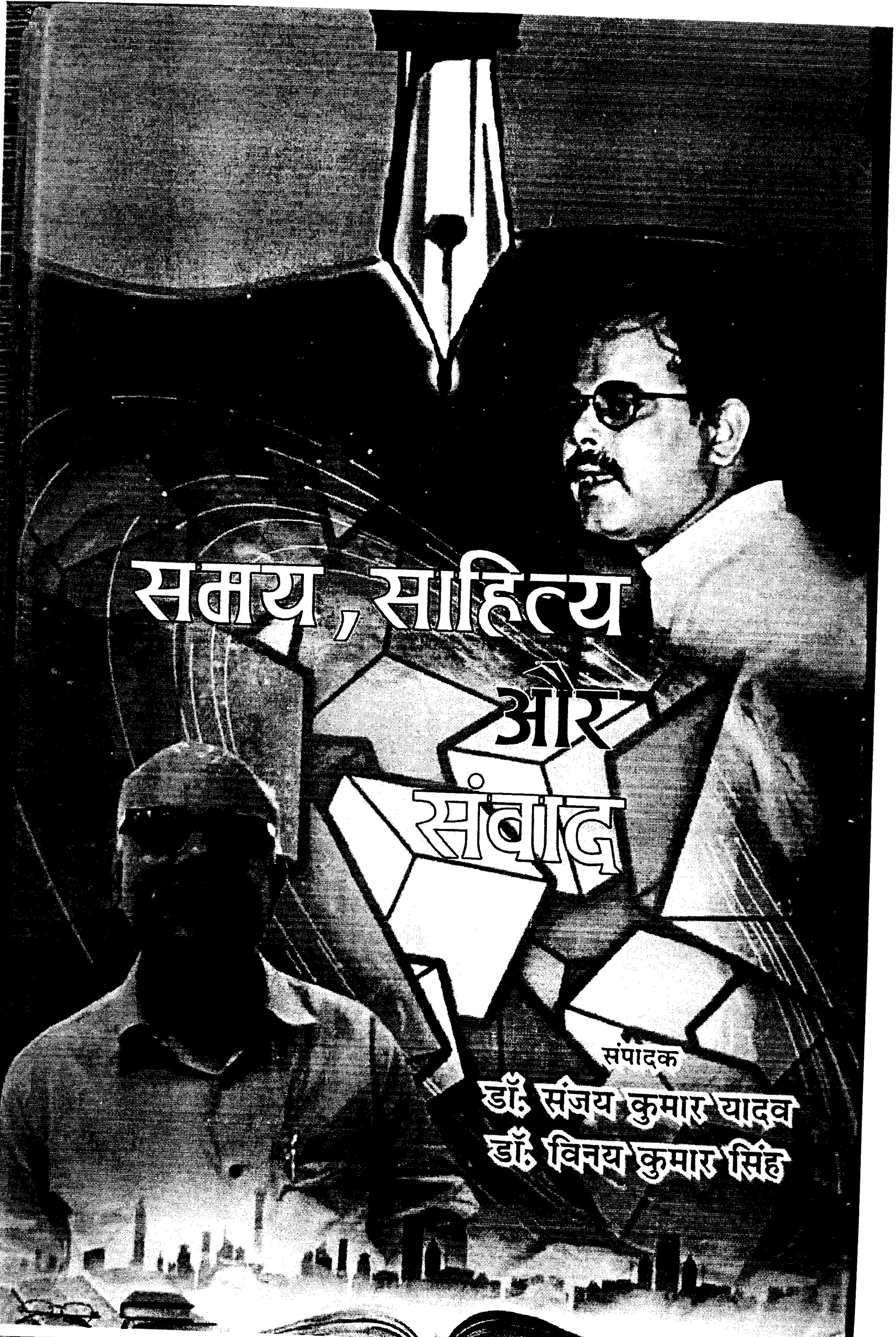

# समय, साहित्य और संवाद

संपादक

डॉ. संजय कुमार यादव

डॉ. विनय कुमार सिंह

# समय, साहित्य और संवाद


संपादक

डॉ. संजय कुमार यादव

डॉ. विनय कुमार सिंह



अभिधा प्रकाशन

**परामर्शक-मंडल**
प्रो. कल्याण कुमार झा, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. सुनील कुमार

**संपादक-मंडल**
डॉ. हेमा कुमारी, डॉ. भोला प्रसाद यादव, डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन', अतुल आजाद

**ISBN : 978-93-92342-46-2**

प्रथम संस्करण
2022

सर्वाधिकार
**लेखकाधीन**

**प्रकाशक**
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
**दिल्ली कार्यालय**
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110094

**अक्षर-संयोजन**
एस. कुमार

**आवरण**
हिमांशु राज

**मुद्रक**
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली-32

**मूल्य**
1100/- (ग्यारह सौ रुपये)

---

***Samay, Sahitya aur Samwad***
*Edited By* **Dr. Sanjay Kumar Yadav & Dr. Vinay Kumar Singh**
**Rs. 1100.00**

# अनुक्रम


**संपादकीय**

शब्द-सारथी की अक्षर-यात्रा/ डॉ. संजय कुमार यादव एवं डॉ. विनय कुमार सिंह/9

**संस्मरण**

1. श्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा का प्रतिमान : सतीश कुमार राय/ डॉ. परमेश्वर भक्त/13
2. 'पर-उपकार वचन मन काया' के विग्रह : डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. जंगबहादुर पांडेय 'तारेश'/17
3. डॉ. सतीश कुमार राय का लेखकीय व संपादकीय व्यक्तित्व/ साकेत बिहारी शर्मा 'मंत्र मुदित'/28
4. साहित्य-सागर का अनमोल मोती/डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना/34
5. प्रतिमानों के प्रतिमान डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/चतुर्भुज मिश्र/38
6. संवाद का सहज संवेदन और संवेदन का सार्थक सृजन/डॉ. संजय पंकज/42
7. चंपारन का गौरव बढ़ानेवाले विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय/ अंजनी कुमार सिन्हा/48
8. वो देखो! रौशन हुआ जाता है रस्ता.../डॉ. रामेश्वर द्विवेदी/51
9. अनजान को जितना मैंने जाना है/प्रो. (डॉ.) सुरेंद्र प्रसाद केसरी/61
10. चंपारन के रत्न : डॉ. सतीश कुमार राय/प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता/64
11. डॉ. सतीश कुमार राय : एक सहज व्यक्तित्व/प्रो. (डॉ.) संत साह/69
12. प्रो. सतीश कुमार राय : सहज व्यक्तित्व के पुरुषार्थी/प्रो. राजीव कुमार झा/72
13. मेरी राय में प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. श्रीकांत सिंह/75
14. एक चुंबकीय व्यक्तित्व/डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी/78
15. डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान' से नामचीन तक/डॉ. मृगेंद्र कुमार/81
16. अनजान से अभिज्ञान तक/डॉ. तारकेश्वर उपाध्याय/88
17. मेरे लिए सतीश के होने का मतलब/डॉ. अनिल कुमार राय/92
18. उपलब्धियों के शिखर-पुरुष डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. शैल कुमारी वर्मा/95
19. शीतल झरने के मीठे पानी जैसा व्यक्तित्व : प्रो. सतीश कुमार राय जी!/ डॉ. शकील मोईन/98
20. गुफ्तगू में ही झलकती विद्वत्ता/जफर इमाम/100
21. भाई सतीश : एक दृष्टि/लालबाबू शर्मा/103

22. विरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/
डॉ. रामनरेश पंडित रमण/105
23. नमामि वीथिनायकम्!/डॉ. उपेंद्र प्रसाद/108
24. सतीश : मेरा मित्र/मनोज मोहन/113
25. हर दिल अजीज : प्रोफेसर सतीश कुमार राय/डॉ. राजीव कुमार/116
26. सहज और निश्छल साथी : सतीश कुमार राय/अशोक गुप्त/120
27. सहज, सरल और आत्मीय बंधु प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
अरविंद कुमार/124
28. जीवेत शरद: शतम्/डॉ. मधु रचना/131
29. कर्मठता और मेधा के प्रतिमान भाई 'अनजान'/डॉ. नागेंद्र सिंह/134
30. भैया, साइकिल चलाना सीख लीजिए न/डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी/137
31. प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय 'अनजान' से जुड़े संस्मरण/सुरेश गुप्त/149
32. संघर्ष की प्रतिमूर्ति/अरुण गोपाल/163
33. डॉ. सतीश कुमार राय : एक साहित्यिक गौरव-पुरुष/डॉ. दिवाकर राय/165
34. प्रखर व्यक्तित्व, समर्पित शख्सियत डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. सीमा स्वधा/181
35. प्रोफेसर राय को जैसा मैंने जाना/डॉ. अनिता सिंह/185
36. डॉ. सतीश कुमार राय : मेरी नजरों में/डॉ. विजयिनी/187
37. अभिनव अनजान/डॉ. जगमोहन कुमार/189
38. मेरे प्रेरक, मेरे सर्जक : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. हेमा कुमारी/193
39. अनमोल स्मृतियाँ/डॉ. चंद्रलता कुमारी/201
40. गुरुवर : एक परिचय/डॉ. राकेश कुमार/205
41. सहज व्यक्तित्व और प्रखर कर्तृत्व के प्रतिमान/डॉ. कुमार अनुभव/208
42. मेरे गुरुदेव डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. राकेश रंजन/212
43. सर के सान्निध्य में : एक संस्मरण/डॉ. हर्षलता सिंह/217
44. हिंदी के बहुआयामी साधक सतीश राय 'अनजान'/डॉ. संदीप कुमार सिंह/220
45. शोध की अभिलाषा से गुरुदेव मिले/डॉ. संजय कुमार सिंह/222
46. गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय के चरणों में समर्पित संस्मरण के दो शब्द/
डॉ. विजय कुमार पांडेय/225
47. अतीत के पन्नों में मेरे गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. रश्मि कुमारी/228
48. मेरे जीवन-पथ का पाथेय/डॉ. प्रकाश कुमार/232
49. समन्वय और सामंजस्य के अद्भुत कलाकार डॉ. सतीश कुमार राय/
डॉ. प्रीति मणि/237
50. हिंदी के विशाल छायादार वृक्ष प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. यशवंत कुमार/241

51. मेरे गुरु प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. प्रवेश कुमार पासवान/245
52. हिंदी साहित्य के नवल स्तंभ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. राजेश कुमार चंदेल/247
53. आकाशधर्मा गुरु/डॉ. जितेंद्र कुमार/250
54. आकाशधर्मा गुरुवर सतीश कुमार राय/डॉ. भोला प्रसाद यादव/253
55. सहजता, सरलता और सहृदयता के छतनार वटवृक्ष : श्रद्धेय गुरुवर/
डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'/261
56. शोध-मर्मज्ञ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/डॉ. चंद्रभान राम/265
57. अभिनंदन-अभिनंदन/कुमारी रोशनी विश्वकर्मा/269
58. कवि सतीश कुमार राय को जितना मैं जानता हूँ/अविनाश कुमार पांडेय/272
59. सहज व्यक्तित्व : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. गुंजन श्रीवास्तव/276
60. ज्ञान के सागर/डॉ. पूजा/279
61. आँखों देखा सुख/अतुल आजाद/281
62. प्रेरक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा-निवेदन/रश्मि शर्मा/286
63. मेरे प्रेरक और दिशा-निर्देशक/शारदा सिन्हा/288
64. गुरु-कृपा और मैं/पिंकी कुमारी/290
65. दिशाबोध करानेवाले प्रेरक आचार्य सतीश कुमार राय/सुजाता कुमारी/292
66. आचार्यत्व को धन्य करनेवाले गुरु/गीतांजलि कुमारी/296
67. आदरणीय गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/रेशमी कुमारी/299
68. मेरे अर्द्धनारीश्वर : मेरी दृष्टि में/प्रभा राय/302
69. मेरे पिता : जैसा मैंने जाना/डॉ. प्रज्ञा सुरभि/305
70. डॉ. सतीश कुमार राय : एक व्यक्तित्व के अनेक आयाम/समीक्षा सुरभि/309
71. 'अनजान' से अध्यक्ष तक/प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह/318
72. सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति/प्रो. कल्याण कुमार झा/333
73. सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय/डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र/346
74. देखा न कोहकन कोई फ़रहाद के बग़ैर/डॉ. राकेश रंजन/350
75. ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला/डॉ. उज्ज्वल आलोक/361
76. शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. सुशांत कुमार/367
77. 'हिंदी विभाग एक परिवार है'/डॉ. संध्या पांडेय/372
78. 'अपनी मिट्टी का ऋण अब तक नहीं उतार पाया हूँ!'/डॉ. पुष्पेंद्र कुमार/374
79. कुशल प्रशासक डॉ. सतीश कुमार राय/मनोज कुमार/384
80. प्रेरणादायक गुरु डॉ. सतीश कुमार राय/अमित कुमार कर्ण/386

**मूल्यांकन**

81. 'अब नहीं मैं गीत गाने जा रहा हूँ' : डॉ सतीश कुमार राय : एक समग्र मूल्यांकन/ प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार/389
82. सतीश कुमार राय 'अनजान' का कवित्व : एक टिप्पणी/प्रो. रवींद्र उपाध्याय/412
83. उपेक्षित जनपदीय रचनाशीलता के प्रतिबद्ध संकलक-उद्धारक व्यक्तित्व/ प्रो. रमेश ऋतंभर/415
84. चंपारन और प्रो. राय : कहियत भिन्न न भिन्न/डॉ. विनय कुमार सिंह/418
85. डॉ. सतीश कुमार राय की संपादन-दृष्टि/डॉ. सुनील कुमार/425
86. डॉ. सतीश कुमार राय की शोध एवं आलोचना-दृष्टि/डॉ. पवन कुमार/448
87. 'दर्द सहने की तो आदत बहुत पुरानी है'/डॉ. पंकज कर्ण/467
88. शोध का प्रतिमान : एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध/डॉ. अनिता कुमारी/471
89. कवि, शायर डॉ. सतीश कुमार राय/राहुल कुमार/475
90. प्रखर शोध-दृष्टि का प्रतिमान : पत्रकार प्रेमचंद/सपना कुमारी/479
91. डॉ. सतीश कुमार राय की आलोचना-दृष्टि/रितु प्रिया/488
92. समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपराओं का आईना/दिलीप कुमार/497
93. गोपाल सिंह 'नेपाली' : एक मूल्यांकन/सोनम कुमारी/501
94. डॉ. सतीश कुमार राय की दृष्टि में 'नेपाली'/प्रशांत प्रसाद/505

**साक्षात्कार**

95. डॉ. सतीश कुमार राय से एक अंतरंग बातचीत/ डॉ. माधव कुमार/514
96. 'अध्यापन मेरे लिए पेशा ही नहीं, धर्म भी है।'/ डॉ. सतीश कुमार राय से डॉ. अनु की बातचीत/537

**कविता**

97. साहित्यकार श्री सतीश कुमार राय की साठवीं वर्षगाँठ पर/व्रतराज 'विकल'/542
98. हे ज्ञानवान!/डॉ. विनय कुमार सिंह/545
99. सतीश राय होने का मतलब/डॉ. सतीश कुमार 'साथी'/546
100. गुरुवर की अंतस्-गरिमा/अंजनी अपूर्वा/548
101. डॉ. सोनी की दो कविताएँ/549
102. वीणा द्विवेदी की दो कविताएँ/552
103. अक्षर-देह रजनीगंधा है/डॉ. संजय कुमार यादव/563

**जीवन-वृत्त**/577
**चित्र-वीथिका**/593

# शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय

–डॉ. सुशांत कुमार

शिक्षक से हम शिक्षा प्राप्त करते हैं। शिक्षक वह व्यक्ति है जो हमें जीवनोपयोगी बातें और चीजें सिखलाता है। इनमें व्यावहारिक ज्ञान से लेकर हमारे त्योहारों और रीति-रिवाजों तक के ज्ञान शामिल होते हैं। यही कारण है कि किसी भी व्यक्ति के प्राथमिक शिक्षक उसके माता-पिता एवं सगे-संबंधी होते हैं। शिक्षक हमें शिक्षा देने के बदले किसी आर्थिक लाभ की अपेक्षा नहीं रखते। हाँ, सम्मान की अपेक्षा जरूर रखते हैं। वहीं दूसरी तरफ, अध्यापक वे होते हैं जो हमें अध्ययन कराते हैं। इसका अर्थ यह है कि अध्यापक हमें किताबी ज्ञान देते हैं। इस तरह का ज्ञान हमें कागजी प्रमाण-पत्र अर्थात् डिग्री लेने में मदद करता है। अध्यापक किसी संस्थान के अंग होते हैं, जो विद्यार्थियों को कागजी ज्ञान देने के बदले उन्हें वेतन प्रदान करता है। कुछ अध्यापक हमें शिक्षक की भूमिका निभाते हुए भी मिलते हैं जो उन्हें अन्य अध्यापकों से अलग व बेहतर बनाता है । ऐसे ही अध्यापक हैं प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय, जो निरंतर तीन दशकों से अधिक समय से शिक्षादान करते हुए अपने विद्यार्थियों के सबसे पसंदीदा शिक्षक बने हुए हैं। प्रो. राय के व्यक्तित्व में अध्यापक एवं शिक्षक के इस मणिकांचन-संयोग का ही परिणाम है कि आज देश के विभिन्न सरकारी, गैर-सरकारी संस्थानों में उनके विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं, सफलता के मार्ग पर कुशलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

अध्यापक एवं शिक्षक के लिए 'गुरु' शब्द का भी प्रयोग पर्यायवाची के रूप में किया जाता है। लेकिन 'गुरु' का अर्थ इन दोनों से अलग है। भारतीय परंपरा में 'गुरु' एक शिक्षक से अधिक प्रभावशाली होता है। संस्कृत में 'गुरु' का शाब्दिक अर्थ है–'अंधकार को दूर करनेवाला'। परंपरागत रूप से गुरु, शिष्य के लिए एक श्रद्धेय व्यक्ति है। गुरु एक परामर्शदाता के रूप में होता है, जो अपने शिष्यों में मानवीय व व्यावहारिक

मूल्यों को स्थापित करने में मदद करता है। वह अपने शिष्यों के बीच अनुभवात्मक ज्ञान को उतना ही साझा करता है जितना कि शाब्दिक ज्ञान को। वह अपने शिष्यों के जीवन में एक अनुकरणीय और प्रेरणादायक स्रोत के रूप में आकर उनके सर्वांगीण विकास में मदद करता है। कबीर ने सच्चे गुरु के चार मुख्य लक्षण बताए हैं, जो इस प्रकार हैं–

> गुरु के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना।।
> दूजे हरि भक्ति मन कर्म बानि, तीजे समदृष्टि करि जानी।।
> चौथे वेद विधि सब कर्मा, ये चार गुरु गुण जानों मर्मा।।

अर्थात् सच्चा गुरु वह है :

1. जो सभी वेदों तथा शास्त्रों को ठीक से जानता है।

2. जो स्वयं भी मन-कर्म-वचन से भक्ति करता है, अर्थात् उसकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं होता।

3. जो सभी अनुयायियों से समान व्यवहार करता है, अर्थात् किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करता।

4. जो सभी भक्ति-कर्म वेदों के अनुसार करवाता है तथा अपने द्वारा करवाए भक्ति-कर्मों को वेदों से प्रमाणित भी करता है।

कबीर के उपर्युक्त मानकों के अनुसार सच्चा गुरु मिलना मुश्किल है। लेकिन इस घोर भौतिकवादी युग में भी प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय में सच्चे गुरु के तमाम लक्षण मौजूद हैं। उनकी मान्यता है कि "विद्यार्थी हैं तब ही शिक्षक, अध्यापक या गुरु हैं। विद्यार्थी के बिना अध्यापक, शिक्षक एवं गुरु का कोई महत्त्व नहीं है।" अपने अध्यापकीय जीवन के केंद्र में विद्यार्थियों को जगह देनेवाले डॉ. राय एक तरफ अपने विषय के अच्छे जानकार हैं और उनकी कथनी व करनी में कोई अंतर भी नहीं है, तो वहीं दूसरी तरफ वे अपने शिष्यों के साथ जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग आदि के आधार पर किसी तरह का भेदभाव नहीं करते तथा नियमानुसार स्वयं के जीवन को अनुशासित रखते हैं, साथ ही अपने शिष्यों से भी इसकी अपेक्षा रखते हैं। क्या एक सच्चे गुरु के लिए इतना पर्याप्त नहीं है? व्यक्तिगत तौर पर मेरा यह मानना है कि प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय अध्यापक, शिक्षक एवं गुरु तीनों की भूमिकाओं का निर्वहण एक साथ करते हुए समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार निरंतर कर रहे हैं। आज बाबासाहेब भीमराव

अंबेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष की महती भूमिका का निर्वहण करते हुए वे हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। अध्यक्ष होने से पहले वे शिक्षक, अध्यापक व गुरु हैं।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय की मान्यता है कि "शिक्षक का संबंध विद्यार्थियों से मुख्यत: वर्ग के माध्यम से ही बनता है, अर्थात् वर्ग-अध्यापन के माध्यम से शिक्षक-छात्र-संबंध निर्मित होते हैं। वर्ग के लिए छात्र-छात्राओं के साथ-साथ शिक्षक का भी अनुशासित होना अनिवार्य है।" वस्तुत: वर्ग में अनुशासन एक बहुआयामी संकल्पना है। वर्ग में अनुशासन बनाए रखना छात्र-छात्राओं से अधिक शिक्षक की जिम्मेदारी होती है। शिक्षक अपने अध्यापन-कौशल के माध्यम से छात्र-छात्राओं में अनुशासन बनाए रख सकते हैं। संभव है कि कभी शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के प्रति कठोर होना पड़े तो यह भी संभव है कि एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार हो जाए। कभी वह उसके सवालों के जवाब बन जाए तो कभी उसके लिए अनेकों अनुत्तरित प्रश्न छोड़ जाए। कभी वह वर्ग में खूब हसाएँ तो कभी कड़वी डाँट से आँसू बहाने पर मजबूर कर दे। पाठ्यक्रम की बात करते-करते वह आगामी चुनौतियों के प्रति सतर्क करने लगे तो यह भी संभव है कि वह वर्ग में ही उन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने विद्यार्थियों को तैयार करने लगे। वह हर समय वर्ग-संचालन के दौरान स्वयं अनुशासित रहते हुए अपने विद्यार्थियों से भी वैसी ही अपेक्षा रखे। वर्ग में समय से प्रवेश एवं समय से अध्यापन प्रारंभ करना ही नहीं, अपितु परीक्षा के उलझनों को भी सुलझाने में छात्रों की मदद करे। अकादमिक क्षेत्र ही नहीं, प्रतियोगिता-परीक्षाओं की तैयारी के लिए भी वर्ग में छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करता रहे। साहित्य का अध्येता होने के नाते न सिर्फ पाठ्यक्रम की उलझने सुलझाता रहे, बल्कि अपने विद्यार्थियों में रचनात्मक प्रतिभा की पहचान कर उसे प्रोत्साहित भी करे। मुझे यह कहते हुए तनिक भी संकोच नहीं है कि प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय उपर्युक्त वर्णित सभी गुणों से संपन्न हैं। उनका जीवन विद्यार्थियों के लिए समर्पित है। विश्वविद्यालय में अधिकारी रहते हुए भी वे वर्ग लेना नहीं भूलते थे। आज जब वे विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष हैं तो हम सभी युवा शिक्षकों से अधिक वर्ग वे नियमित रूप से लेते

हैं। उनकी अध्यापन-शैली ऐसी है कि विद्यार्थी प्रथम कक्षा से ही उनका मुरीद बन जाए। प्रो. (डॉ.) राय न सिर्फ अपने विषय के साथ पूर्ण न्याय करते हैं, बल्कि वर्ग में उपस्थित सभी विद्यार्थियों के प्रति भी अत्यंत संवेदनशील रहते हैं। अपने अनुभव के आधार पर सुदर्शन की प्रसिद्ध कहानी 'हार की जीत' से एक उद्धरण उधार लेकर मैं यह कह सकता हूँ कि "माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय को अपने विद्यार्थियों के बीच आता है।"

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय में मैं चार विशिष्ट गुण देख पाता हूँ, जिनकी वजह से वे हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के मध्य समादृत हैं। प्रथम यह कि शिक्षक की जिम्मेदारी होती है कि वह राष्ट्र-चरित्र का निर्माण करने हेतु बच्चों में अच्छे गुणों और शिक्षा को बढ़ावा दे। शिक्षण-संस्थानों से ही देश का भविष्य निकलता है, इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक खुद चरित्रवान हो, ताकि उसे देखकर बच्चे उसे आदर्श मानने लगें। विद्यार्थियों के ऊपर उसकी एक अमिट छाप पड़नी चाहिए। बच्चे सिर्फ पढ़ाई के लिए ही विश्वविद्यालय में नहीं आते हैं, बल्कि इसलिए आते हैं कि उनके व्यक्तित्व का निर्माण भी हो सके। प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय को अनेक विद्यार्थी अपना आदर्श मानते हैं। यह उनके सफल शिक्षक होने का प्रमाण है।

दूसरी बात, एक अच्छा शिक्षक वही होता है जो अपने सभी विद्यार्थियों से समान व्यवहार करता है और सभी के आत्मविश्वास को बढ़ाने का कार्य करता है। कई बच्चे हैं जो दूसरे बच्चों की भाँति पढ़ने में तेज नहीं होते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, परंतु शिक्षक को उन कारणों के बारे में न सोचते हुए यह सोचना चाहिए कि आज यदि कमजोर बच्चों पर ध्यान नहीं दिया गया तो ये बच्चे भविष्य में अपने जीवन में संघर्ष ही करते रहेंगे। माता-पिता भले ही ध्यान दें या नहीं, लेकिन शिक्षक को हर बच्चे पर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रो. राय में यह विशेष गुण भी विद्यमान है। वे कमजोर विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देते हैं।

तीसरी बात यह कि शिक्षक का कार्य सिर्फ पाठ्यक्रम की किताबें पढ़ाते रहना ही नहीं होता। उसे अपने जीवन का अनुभव भी बाँटना होता है। इससे वह अपने विद्यार्थियों के साथ बेहतर तालमेल बैठा पाता है। एक

बेहतर शिक्षक वही होता है जो अपने विद्यार्थियों को जीवन के अच्छे-बुरे की पहचान, उज्ज्वल भविष्य के लिए जरूरी बातें, व्यवहार और मानवता की सीख दे सके। अपने वर्ग एवं वर्ग से बाहर प्रो. राय अपने जीवन-संघर्षों की कहानी विद्यार्थियों को सुनाते रहते हैं। वस्तुतः यह भी शिक्षण का महत्त्वपूर्ण पहलू है।

चौथी और अंतिम बात यह कि एक अच्छा और प्रभावशाली अध्यापक वह है जो विद्यार्थियों, पदाधिकारियों तथा अन्य के सामने किसी भी गलत बात के लिए झुकता नहीं हो, किसी प्रकार का अन्याय सहन करता नहीं हो और किसी भी गलत बात से समझौता नहीं करता हो। जो अध्यापक अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सचेत रहता है वही अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर पाता है। प्रो. राय आत्मसम्मान के साथ कभी भी समझौता नहीं करते हैं। यह उनके व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण एवं मजबूत पक्ष है।

–सहायक प्राध्यापक,
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।